समास

Name:- Soni Kumari
Class:- B.A II
Deptt:- Sanskrit

प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्

(1) प्रस्तुत सूत्र लघुसिद्धान्त कौमुदी के समास प्रकरण से उद्धृत है। यह सूत्र संज्ञा सूत्र है। सूत्र का शब्दार्थ है — समासशास्त्र में प्रथमा विभक्ति से निर्दिष्ट 'उपसर्जन' कहलाता है। तात्पर्य यह कि समास विधान करने वाले सूत्रों में प्रथमा विभक्ति से जिस पद का निर्देश किया जाता है उसे 'उपसर्जन' कहते हैं। उदा०— समास विधायक सूत्र 'अव्ययं विभक्ति—' में 'अव्ययम्' पद प्रथमान्त है, अतः वह प्रकृत सूत्र से 'उपसर्जन' संज्ञक होगा। 'हरि ङि अधि' में 'अधि' यही अव्यय है, अतः वह भी 'उपसर्जन' है।

(2)

उपसर्जनं पूर्वम्

सूत्र का शब्दार्थ है — (उपसर्जनम्) उपसर्जन (पूर्वं) पूर्व या पहिले होता है। 'प्राक्कडारात् समासः' इससे सूत्र का अर्थ स्पष्ट नहीं होता है अतः इसकी स्पष्टीकरण के लिए 'प्राक्कडारात् समासः' की अनुवृत्ति करते हैं। इस प्रकार सूत्र का अर्थ है :— समास में 'उपसर्जन' का प्रयोग पहले होता है। उदा० — 'हरि ङि अधि' में 'अधि' उपसर्जन है, अतः प्रकृत सूत्र से उसका प्रयोग पहिले होने पर 'अधि हरि ङि' रूप बनता है।

यहाँ प्रातिपदिक होने पर सुप्-लोप हो 'अधि हरि' रूप बनने पर अव्ययीभाव होने के कारण प्राप्त 'सु' का लोप होकर 'अधिहरि' रूप सिद्ध होता है।

(3) अव्ययीभावश्च

सूत्र का शब्दार्थ है- (च) और (अव्ययीभावः) अव्ययीभाव...। यहाँ सूत्रस्थ 'च' से ही ज्ञात हो जाता है कि यह सूत्र अपूर्ण है। इसके स्पष्टीकरण के लिए 'स नपुंसकम्' से 'नपुंसकम्' की अनुवृत्ति करनी होगी। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा- अव्ययीभाव समास नपुंसकलिङ्ग होता है। उदा० - 'गोपा ङि अधि' में 'अव्ययं विभक्ति-०' से पूर्ववत् समास आदि होकर 'अधिगोपा' रूप बनता है। इस स्थिति में अव्ययीभाव होने के कारण प्रकृत सूत्र से नपुंसकलिङ्ग हुआ। तब 'ह्रस्वो नपुंसके-०' से ह्रस्व होकर 'अधिगोप' रूप बनेगा। यहाँ प्रथमा के एकवचन में 'सु' होकर 'अधिगोप सु' रूप बनने पर 'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' का लोप प्राप्त होता है, किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः' से उसका बाध होता है।